गायत्री माता की आरती

ज्ञान को दीप और श्रद्धा की बाती ।

सो भक्ति ही पूर्ति करै जहँ घी की ॥

मानस की शुचि थाल के ऊपर ।

देवी की ज्योति जगै जहँ नीकी ॥

शुद्ध मनोरथ के जहाँ घण्टा ।

बाजैं करै पूरी आसहु ही की ॥

जाके समक्ष हमें तिहुँ लोक कै ।

गद्दी मिलै तबहूँ लगै फीकी ॥

संकट आवैं न पास कबौ तिन्हें ।

सम्पदा औ सुख की बनै लीकी ॥

आरती प्रेम सों नेम सों जो करि ।

ध्यावहिं मूरति ब्रह्म लली की ॥

सभी आरती के पीडीएफ कहीं भी डाउनलोड

atozpe.in